उज्जैन नगर की ऐतिहासिकता

उज्जैन के विविध नाम, उज्जैन से संबंधित ग्रन्थों में विषयवस्तु और राजा-सामंत-मंत्री आदि

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर

(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

महामंत्री - प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

संयुक्त मंत्री - अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

उज्जैन नगर भारत देश के मध्यप्रदेश प्रान्त में स्थित है। यह नगर गौरवशाली, प्राचीनतम, पौराणिक और परम्पराओं से ओतप्रोत नगरों में से एक नगर है। यह भारत की सांस्कृतिक राजधानी भी है। यह क्षिप्रा नदी के तट पर शोभायमान है और प्राचीन काल में 'अवन्ती' नाम से प्रसिद्ध था। उज्जैन को महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के कारण विशेष धार्मिक महत्व प्राप्त है। यह हिन्दू पंचांग के अनुसार कर्क रेखा पर स्थित है और समय गणना का प्राचीन केंद्र रहा है।

यह नगर कालिदास, वराहमिहिर और भर्तृहरि जैसे महान विद्वानों की कर्मभूमि रहा है। उज्जैन सिंहस्थ कुंभ मेले के लिए भी विश्वभर में प्रसिद्ध है, जो हर 12 वर्ष में आयोजित होता है। यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल महाकालेश्वर मंदिर, कालभैरव मंदिर, सांदीपनि आश्रम, हरसिद्धि मंदिर और वेधशाला हैं। उज्जैन धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का अद्वितीय संगम है। उज्जैन नगर को समय-समय पर विविध नामों से पुकारा गया। नगर की विशेषताओं को देखते हुए विविध नामों का उल्लेख ग्रन्थों में प्राप्त होता है। सभी नामों की अपनी-अपनी पृथक् विशेषता है। किसी न किसी प्रसंग से इन नामों की सार्थकता है। यहाँ उन नामों की विस्तृत सूची लिख रहे हैं।

1. अवन्ती – प्राचीन महाजनपद का नाम।

2. उज्जयिनी – संस्कृत व पौराणिक नाम, जिसका अर्थ है ‟विजयी नगर” ।

3. कुमारियों की नगरी – देवी-पूजन और कन्या-पूजन परंपरा के कारण।

4. महाकाल की नगरी – श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के कारण।

5. कुंभ नगरी – सिंहस्थ कुंभ मेले के कारण।

6. शिप्रा तट की नगरी – पवित्र शिप्रा नदी के किनारे स्थित होने के कारण।

7. कालिदास की नगरी – संस्कृत महाकवि कालिदास का साहित्यिक केंद्र।

8. कालभैरव की नगरी – कालभैरव मंदिर और उसकी अद्भुत परंपराओं के कारण।

9. अमरावती – अमरों (देवताओं) के निवास योग्य पवित्र नगरी के रूप में।

10. विशालापुरी – प्राचीन ग्रंथों में वर्णित एक नाम।

11. मोक्षदायिनी नगरी – मोक्ष प्रदान करने वाली नगरी के रूप में।

12. कनकश्रृंगी – स्वर्ण के समान तेजोमयी होने के कारण।

13. भुक्तिमुक्तिदायिनी – भौतिक सुख और मोक्ष, दोनों प्रदान करने वाली।

14. विक्रम की राजधानी – सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी के रूप में।

15. सप्तपुरियों में एक – काशी, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, कांची, उज्जैन, द्वारका को पवित्र सप्तपुरी कहा गया है।

16. चक्रतीर्थ नगरी – शिप्रा किनारे स्थित प्रसिद्ध तीर्थों के कारण।

17. विक्रमपुरी – विक्रम संवत की उत्पत्ति यहीं से मानी जाती है।

18. भैरवनगरी – यहाँ के आठ भैरव मंदिरों के कारण।

उज्जैन का उल्लेख अत्यंत प्राचीन साहित्य से लेकर आधुनिक ग्रंथों तक में मिलता है। संक्षेप में इसे तीन भागों में समझ सकते हैं–

(1) वेद-पुराण एवं धर्मग्रंथ

(2) संस्कृत काव्य-नाट्य साहित्य

(3) ऐतिहासिक-यात्रावृत्तांत एवं आधुनिक साहित्य।

1. वेद, पुराण एवं धर्मग्रंथों में -

- **स्कन्द पुराण** – अवन्ती खण्ड में उज्जयिनी (उज्जैन) का विस्तारपूर्वक वर्णन, विशेषकर महाकालेश्वर मंदिर, क्षिप्रा नदी और तीर्थों का महत्व बताया गया है।
- **महाभारत** – उज्जयिनी को अवन्ती जनपद की राजधानी के रूप में वर्णित किया गया है।
- **रामायण (वाल्मीकि)** – उज्जयिनी का अप्रत्यक्ष उल्लेख अवन्ती के संदर्भ में दिया गया है।
- **मत्स्य पुराण, वाराह पुराण, वायु पुराण** – उज्जयिनी के धार्मिक महत्व और महाकाल क्षेत्र की महिमा का वर्णन किया है।
- **कर्मपुराण / अवन्ती महात्म्य** – उज्जैन के तीर्थों का विवरण मिलता है।

2. संस्कृत काव्य और नाटकों में -

- **कालिदास का मेघदूत** – यक्ष द्वारा मेघ को उज्जयिनी की ओर जाने का मार्ग बताना और शहर की सुंदरता का वर्णन करना। पूर्वमेघ को यक्ष उज्जयिनी से होकर जाने का मार्ग बताता है, जिसमें क्षिप्रा नदी, मंदिरों, बागों और राजमार्गों का मनोहारी चित्रण है।
    - **"तां चैत्ररथाभरणां नगरीं रम्यां समासाद्य उज्जयिन्याख्याम्"**
- **रघुवंश** – उज्जयिनी को राजकीय वैभव, सांस्कृतिक उन्नति और नागरिक जीवन के सौंदर्य के साथ चित्रित किया गया है।

- **भट्टिकाव्य (भट्टि)** - व्याकरण-काव्य होने पर भी इसमें उज्जयिनी के राजदरबार और नगर का उल्लेख आता है, जिससे उसके ऐश्वर्य और विद्वता-केंद्र होने का परिचय मिलता है।
- **दंडी** – दशकुमारचरित उज्जयिनी को एक समृद्ध राजधानी के रूप में दिखाया गया है, जहाँ राजनैतिक कौशल, कूटनीति, व्यापार और सांस्कृतिक गतिविधियाँ उत्कर्ष पर थीं।
- **बाणभट्ट की कादंबरी** – कादंबरी उज्जयिनी का वर्णन विद्वानों, कलाविदों और उच्च संस्कार वाले समाज के रूप में आता है। यहाँ के राजदरबार की भव्यता और नाट्य-संगीत का उल्लेख भी मिलता है। उज्जयिनी के विद्वानों और राजदरबार का संदर्भ मिलता है।
- **भर्तृहरि शतकत्रय** – शतकत्रय नीतिशतक, वैराग्यशतक और श्रृंगारशतक में उज्जयिनी अप्रत्यक्ष रूप से पृष्ठभूमि के रूप में दिखाई देती है, क्योंकि भर्तृहरि उज्जैन के राजा रहे।
  - **मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)** – मालव और अवन्ती के संदर्भ में उज्जयिनी का उल्लेख।
  - **मृच्छकटिकम् (शूद्रक)** – अवन्ती क्षेत्र और उज्जयिनी का परोक्ष वर्णन।
  - **हर्षचरितम् (बाणभट्ट)** – उज्जयिनी के विद्वान, दरबार और उत्सव।

महाकाव्य एवं गीतिकाव्य -

  - **कुमारसम्भवम् (कालिदास)** – यद्यपि मुख्य कथा हिमालय–पार्वती–शिव पर है, फिर भी उज्जयिनी का उल्लेख व्यापारिक और धार्मिक केंद्र के रूप में आता है।
  - **सप्तशती (हाला)** – प्राकृत प्रेमकाव्य में अवन्ती और उज्जयिनी के सौंदर्य व रसानुभूति का चित्रण।
  - **साहित्यदर्पण (विश्वनाथ)** – अलंकार और काव्यशास्त्र में उदाहरण रूप में उज्जयिनी का उल्लेख।
  - **अवन्तिसुन्दरीकथा (दंडी को समर्पित)** – इसमें उज्जयिनी की राजकुमारी और नगर के वैभव का वर्णन।

नाट्य साहित्य –

- **रत्नावली (श्रीहर्ष) –** उज्जयिनी को राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भ में दर्शाया गया है।
- **प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र) –** दार्शनिक नाटक, जिसमें उज्जयिनी के पंडितों और वाद-विवाद परंपरा का उल्लेख।
- **उत्तमचरितम् –** क्षेत्र विशेष की ऐश्वर्यपूर्ण छवि में उज्जयिनी का संदर्भ।

ऐतिहासिक/प्रबन्ध ग्रंथ –

- **प्रबन्धचिन्तामणि (मेरुतुंग) –** उज्जयिनी के राजाओं और विद्वानों का विवरण।
- **राजतरंगिणी (कल्हण) –** यद्यपि मुख्य कथा कश्मीर की है, फिर भी उज्जयिनी के राजनीतिक संबंधों का उल्लेख।
- **अवन्तीखण्ड (स्कन्दपुराण) –** धार्मिक महिमा के साथ उज्जयिनी के तीर्थों, उत्सवों और महाकाल क्षेत्र का विस्तारपूर्वक वर्णन।
- **अन्य काव्य संदर्भ –**
- **भवभूति के उत्तररामचरितम् और मालतीमाधव –** मालवा और उज्जयिनी का सांस्कृतिक परिदृश्य।
- **जयदेव का गीतगोविन्दम् –** प्रत्यक्ष नाम नहीं, परन्तु अवन्ती क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में उज्जयिनी का परोक्ष भाव।
- **आनन्दवर्धन का ध्वन्यालोक –** उदाहरण में उज्जयिनी का उल्लेख नगर–सौंदर्य के रूप में।
- 1. पुराणोत्तर आख्यान और महाकाव्य
- **भोजप्रबन्ध (बल्लाल) –** राजा भोज की राजधानी उज्जयिनी के सांस्कृतिक वैभव, विद्वानों की सभा और कला संरक्षण का वर्णन।

- **अवन्तीखण्ड (स्कन्दपुराण)** – उज्जयिनी की धार्मिक महिमा, महाकालेश्वर, कालभैरव, हरसिद्धि, गढ़कालिका आदि तीर्थों का विस्तार।
- **वायु पुराण** – उज्जयिनी को सप्तपुरी में गिना गया है और इसकी मोक्षप्रद महिमा का वर्णन है।
- **वराह पुराण** – उज्जयिनी को शिवभक्ति और तीर्थ महिमा के केंद्र के रूप में चित्रित किया है।
- **संस्कृत कथा-साहित्य –**
- **कथासरित्सागर (क्षेमेन्द्र / सोमदेव)** – कई कथाओं में उज्जयिनी का उल्लेख; राजा विक्रमादित्य, भर्तृहरि और तंत्र-विद्या की पृष्ठभूमि।
- **विक्रमचरितम् / सिंहासनद्वात्रिंशिका** – उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य और उनके न्याय, पराक्रम व विद्वान सभा का विस्तार।
- **भविष्यपुराण** – विक्रम संवत और उज्जयिनी की स्थापना का वर्णन।

नाटकों और काव्यों में अन्य उल्लेख –

- **प्रियदर्शनिका (हर्षवर्धन)** – उज्जयिनी राजदरबार का परोक्ष संदर्भ।
- **मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)** – मालव-विदर्भ संघर्ष की कथा, जिसमें उज्जयिनी राजनीतिक केंद्र है।
- **मालतीमाधव (भवभूति)** – यद्यपि कथा पाद्मावती और विदिशा के बीच है, फिर भी उज्जयिनी क्षेत्र का उल्लेख।
- **कीर्तिलता / कीर्तिकौमुदी (विद्यापति)** – विक्रमादित्य कथा में उज्जयिनी की छवि।

तन्त्र और ज्योतिष ग्रंथ

- **सूर्यसिद्धांत** – उज्जयिनी को 'प्रधान मेरिडियन' माना गया और समयगणना का केंद्र बताया।
- **पंचसिद्धांतिका (वराहमिहिर)** – उज्जयिनी के वेधशाला और खगोल अध्ययन का वर्णन।

- **बृहज्जातक (वराहमिहिर) –** ज्योतिष शास्त्र में उज्जयिनी का महत्व।

3. ऐतिहासिक, यात्रावृत्तांत और आधुनिक ग्रंथों में –

- **युवानच्वांग (Hiuen Tsang) –** 7वीं सदी में आए चीनी यात्री ने उज्जयिनी के भव्य मंदिरों और शिक्षा केंद्रों का उल्लेख किया।
- **अलबरूनी –** उज्जैन को खगोलशास्त्र और समयगणना का प्रमुख केंद्र बताया।

आधुनिक इतिहास ग्रंथ – 'प्राचीन भारत का इतिहास' (आर.सी. मजूमदार), 'Ancient Geography of India' (Alexander Cunningham) में उज्जैन के भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व का वर्णन।

समकालीन पुस्तकें – "उज्जैन दर्शन", "अवन्ती महिमा", "सिंहस्थ महात्म्य" इत्यादि में उज्जैन के वैभव, पुरातात्विक इतिहास, पौराणिक इतिहास और वर्तमान विरासत के संदर्भ में वर्णन है।

जैन ग्रन्थों में उज्जैन/उज्जयिनी –

अवंती - भरत क्षेत्र आर्य खंडका एक देश।

वर्तमान उज्जैन का पार्श्ववर्ती देश। उज्जैनी इसकी राजधानी है। पहिले यह नगर वर्तमान मालवा प्रांत में ही सम्मिलित था। (महापुराण/प्रस्तावना 48/पं.पन्नालाल)।

विशाखाचार्य - श्रुतावतार के अनुसार आप भद्रबाहु प्रथम के पश्चात् प्रथम 11 अंग व 10 पूर्वधारी थे। द्वादश वर्षीय दुर्भिक्ष के अवसर पर आप भद्रबाहु स्वामी के साथ दक्षिण की ओर चले गये थे। भद्रबाहु स्वामी की तो वहाँ ही समाधि हो गयी पर आप दुर्भिक्ष समाप्त होने पर पुनः उज्जैन लौट आये।

(भद्रबाहु चरित/3) समय–वीर निर्वाण सं 162-172 (ई.पू.365-355)।

आचार्य का आयापायविदशित्व गुण— 5 वां गुण होना चाहिए आचार्य में आयापायविदशित्व। किसी भी कार्य की हानि हो, किसी भी कार्य में लाभ हो उसके बताने की जिसमें क्षमता है वह होता है आयापायविदर्शी। आचार्य महाराज लाभ अलाभ की बात जान जाते हैं। अकंपनाचार्य मुनि महाराज, जो कि 700 मुनियों के आचार्य थे, जान लिया था उज्जैन नगर में कि यहाँ बड़ा उत्पात होने को है, यदि पहिले उपयोग दिए होते इस ओर तो उस स्थान पर ही न जाते, क्योंकि संघ सहित थे। जब जाना तब सबको आज्ञा किया कि सब लोग मौन रहें। तो लाभ जानना, हानि जानना, उससे बचने का उपाय जानना, यह बात जिनमें विशेषता से पायी जाती है वे आचार्य होते हैं।

पद्मपुराण में उज्जैन का वर्णन - तदनंतर जिनका मुख सौम्य था, जो सर्व प्रकार से सुंदर थे, मानो कांति के समुद्र में ही स्थित थे, नेत्रों को उत्सव प्रदान करने वाले थे, और पास में बैठी हुई अतिशय नम्र सीता से सुशोभित थे ऐसे राम को देखकर उस पुरुष ने क्षुधा आदि से उत्पन्न हुए श्रम को शीघ्र ही छोड़ दिया ॥69-70॥ उसने हाथ जोड़ मस्तक से भूमि का स्पर्श करते हुए नमस्कार किया तथा छाया में विश्राम कर इस प्रकार कहे जाने पर वह बैठ गया ॥71॥ तदनंतर राम ने वाणी से मानो अमृत झराते हुए उससे पूछा कि हे भद्र! तू कहाँ से आ रहा है और तेरा क्या नाम है ? ।।72 ।। उसने कहा कि मैं बहुत दूर से आ रहा हूँ और सीरगुप्ति मेरा नाम है । यह देश मनुष्यों से रहित क्यों है ? इस प्रकार राम के पूछने पर वह पुनः कहने लगा ॥73॥ कि जिसने अपने प्रताप से बड़े-बड़े सामंतों को नम्रीभूत कर दिया है तथा जो देवों के समान जान पड़ता है **ऐसा सिंहोदर नाम से प्रसिद्ध उज्जयिनी नगरी का राजा है** ।। 74 दशांगपुरु का राजा वज्रकर्ण जिसने कि अनेक आश्चर्य जनक कार्य किये हैं इसका अत्यंत प्रिय सेवक है ॥75।। वह तीन लोक के अधिपति जिनेंद्र भगवान् और निर्ग्रंथ मुनियों को छोड़कर किसी अन्य को नमस्कार नहीं करता है ॥76॥ 'साधु के प्रसाद से उसका उत्तम सम्यग्दर्शन पृथिवी में प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है' यह क्या आपने नहीं सुना ? ॥77॥ इसी बीच में राम का अभिप्राय जानने वाल लक्ष्मण ने उससे पूछा कि हे भाई ! साधु ने इस पर किस तरह प्रसाद किया है ? सो तो बता ॥78।।

पद्मपुराण पर्व33

महापुराण -

1. शिप्रा के तट पर स्थित मालव जनपद के अंतर्गत एक नगरी ।

महापुराण 16.153, 29.47, 63

2. एक विषय (देश) । इस देश को रचना इंद्र ने की थी । विहार करते हुए वृषभदेव यहाँ आये थे । भरतेश के सेनापति ने इस देश को अपने अधीन किया था ।इसका दूसरा नाम उज्जयिनी था ।

महापुराण 16.143-152, 25.287, 29.40, 71.206, पद्मपुराण - 33.138,145

हरिवंशपुराण -

1. राजा श्रीधर्मा के बलि, बृहस्पति आदि मंत्रियों का मृतसागर मुनि से उज्जैन में विवाद हुआ था और वे देवों दारा यहीं कीले गये थे तथा इस नगर से उन्हें निकाल भी दिया गया था ।

हरिवंशपुराण - 20.3-11

2. भोगों और शरीर से उदासीन लोगों का यहाँ निवास था । अपरनाम **अवंति** । लक्ष्मण को पति रूप में पाने का जिन कन्याओं को सौभाग्य प्राप्त हुआ था उनमें इस नगर की भी एक कन्या थी ।

पद्मपुराण - 33.138,145, 80.113, हरिवंशपुराण - 60.105

3. मालवा नरेश थे। प्रद्योत आपका अपर नाम था। अवंती या उज्जैनी राजधानी थी। आप प्रसिद्ध राज पालक के पिता थे जो वीर निर्वाण के समय राज्य करते थे। तदनुसार आपका समय वी. नि. पू. 33-0 (ई.पू.560-670) आता है।

(हरिवंश पुराण सर्ग 60/488); (कषायपाहुड़ पुस्तक 1/प्र.51/पं. महेंद्र कुमार)

आराधना कथा कोष - (विष्णुकुमार मुनि की कथा) अनंत सुख प्रदान करने वाले जिनभगवान् जिनवाणी और जैन साधुओं को नमस्कार कर मैं वात्सल्य अंग के पालन करने वाले श्रीविष्णुकुमार मुनिराज की कथा लिखता हूँ ।

अवंतिदेश के अंतर्गत उज्जयिनी बहुत सुन्दर और प्रसिद्ध नगरी है । जिस समय का यह उपाख्यान है, उस समय उसके राजा श्रीवर्मा थे । वे बड़े धर्मात्मा थे, सब शास्त्रों के अच्छे विद्वान थे, विचारशील थे, और अच्छे शूरवीर थे । वे दुराचारियों को उचित दण्ड देते और प्रजा का नीति के साथ पालन करते । प्रजा उनकी बड़ी भक्त थी ।

आराधना कथा कोष

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सुकुमाल चरित्र और अन्य जैन ग्रंथों में उज्जैन (उज्जयिनी) का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों के अनुसार, भगवान महावीर और उनके समय में उज्जैन एक समृद्ध और महत्वपूर्ण साम्राज्य की राजधानी था। मौर्यकाल में यह उपप्रधान शहर माना जाता था, और कई ग्रंथ इसे उज्जयन–उप-राजधानी के रूप में वर्णित करते हैं।

भगवती सूत्र नामक जैन ग्रंथ में 'मालवा' जनपद का वर्णन मिलता है और उसमें अवन्ति (उज्जयिनी) का उल्लेख भी है– जिससे स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र जैन ग्रंथों में व्यापक रूप से जाना जाता था।

विविहपन्नत्ति-कप्प (विविध तीर्थकल्प) – अवंती जनपद और उज्जयिनी क्षेत्र् के जैन तीर्थ। **'विविध तीर्थ कल्प'** नामक ग्रंथ में मालवा प्रदेश को अवंति या अवंती के नाम से वर्णित किया गया है। इसमें अवन्ति (मालवा) क्षेत्र के विभिन्न तीर्थों और चैत्यों का विवरण मिलता है–जैसे कि अभिनंदनदेव का चैत्य आदि।

अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ – उज्जैन स्थित अवंति पार्श्वनाथ मंदिर जैन ग्रंथों और कथाओं में नामित हुआ है। इसमें उज्जयिनी की सबसे प्राचीन पार्श्वनाथ प्रतिमा का उल्लेख है, जो लगभग तीसरी शताब्दी ईस्वी में स्थापित की गई थी।

आचारांग सूत्र – महावीर स्वामी की यात्राओं में अवंती जनपद का उल्लेख।

अवश्यक-चूर्णि – अवंती के राजा और जैन साधु-संतों के प्रसंग।

पद्मपुराण (रावणकाण्ड व उत्तरकाण्ड) – उज्जयिनी का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व।

आदिपुराण (जिनसेनाचार्य) – उज्जयिनी में जैन धर्म का प्रचार और राजाओं के नाम।

उत्तरपुराण (गुणभद्राचार्य) – उज्जयिनी व मालवा के जैन राजाओं का वर्णन।

सुकुमाल चरित्र – उज्जैन के एक राजकुमार का तप-त्याग वर्णन।

प्राकृत -अपभ्रंश ग्रन्थों में उज्जैन -

कुमारपालचरित – मालवा और उज्जयिनी के संदर्भ।

नैमिसारायण – उज्जयिनी की धार्मिक यात्रा का उल्लेख।

आवस्सयण-निर्युक्ति (आवश्यक-निर्युक्ति) – महाराष्ट्री प्राकृत, राजा प्रद्योत और उज्जयिनी का प्रसंग। गाथा 778 आदि प्रद्योत, पलक आदि के वर्णन। **निर्युक्ति** (विशेषकर आवश्यक-निर्युक्ति, उत्तराध्ययन-निर्युक्ति) – उज्जयिनी के राजा और कथाएँ। आवश्यक-निर्युक्ति (जैन-महाराष्ट्रि प्राकृत) - इसमें अनेक कथाएँ/नायकों के प्रसंग आते हैं; उज्जयिनी के राजा प्रद्योत, पलक आदि के प्रसंग और "उदयन–वासवदत्ता" चक्र से जुड़े उल्लेख इसी निर्युक्ति-परम्परा में मिलते हैं। इसी पर आधारित कथासंग्रहों में "उज्जयिनी के राजा प्रद्योत" वाले प्रसंग उद्धृत हैं।

कप्पसूअ (कल्पसूत्र) – कालकाचारिय-कथा – उज्जयिनी के राजा गर्दभिल्ल की कथा। कल्पसूत्र तथा उससे जुड़ी "कालकाचार्य-कथा" (प्राकृत रूप में) - कालकाचार्य-कथा में उज्जयिनी के राजा गर्दभिल्ल द्वारा जैन आर्यिका का अपहरण और उसके बाद शकों द्वारा "उज्जयिनी का घेरा/विजय"— यह पूरी कथा जैन पाण्डुलिपियों में प्राकृत पाठ/प्राकृत-संस्कृत मिश्रित रूप में मिलती रही है। उज्जयिनी के राजा गर्दभिल्ल की कथा, शकों द्वारा आक्रमण।

"उज्जेणियं नगरं, गद्दभिल्लो नाम राजा..."

संग्रहालयों की "कल्पसूत्र-कालकाचार्य-कथा" पाण्डुलिपियाँ स्पष्ट रूप से "प्राकृत में, संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित" बतायी गयी हैं; चित्रित फोलियो में "उज्जयिनी की घेराबन्दी" दृश्य भी सुरक्षित है।

विमलसूरि का पउमचरियम् - यद्यपि यह रामकथा-प्रधान है पर आलोचनात्मक अध्ययनों में इसमें समकालीन जनपद/नगर - उल्लेखों पर चर्चा आती है ।प्रसंगवश उज्जयिनी का उल्लेख।

सूत्रकृतांग सूत्र – अवंती जनपद के संदर्भ।

भगवती सूत्र – उज्जयिनी के व्यापार और राजनैतिक महत्व का उल्लेख।

समवायांग सूत्र – नगरों की सूची में अवंती।

परिशिष्टपर्व (हेमचन्द्र, प्राकृत अंश सहित) – कालकाचार्य और उज्जयिनी प्रसंग।

कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) – उज्जयिनी का विस्तृत वर्णन।

हरिविज्जय (जिनसेन) – राजधानियों और नगरों की सूची में अवंती।

भगवती-चूर्णि – उज्जयिनी से संबंधित व्यापारी और मुनियों के प्रसंग।

दशवैकालिक सूत्र – नगरों और जनपदों के संदर्भ में अवंती का उल्लेख।

अनुपपातिक सूत्र – मुनियों की यात्राओं में उज्जयिनी का प्रसंग।

नायाधम्मकहाओ (न्यायदर्मकथा) – कथानक में उज्जयिनी के राजा/व्यापारी।

उपदेशमालावृत्ति – तीर्थक्षेत्र और नगर विवरण।

आचारांग-चूर्णि – जनपद वर्णन में अवंती।

तंदुलवैयालियं – कथा-संग्रह में उज्जयिनी की घटनाएँ।

समवायांग-चूर्णि – नगर सूचियों में अवंती।

श्रीपालचरियं – राजाओं और नगरों में उज्जयिनी का नाम।

अंगविज्जा – ज्योतिषीय संदर्भ में अवंती जनपद।

पिंगलाचारिय का छंदोऽनुशासन (प्राकृत अंश) – नगर-उल्लेख में उज्जयिनी।

भगवई सूअ (भगवती सूत्र) – अर्धमागधी प्राकृत, उज्जयिनी (Ujjeni) का उल्लेख व्यापार व राजकीय प्रसंग में।

"उज्जेणियं नगरं..."

(भगवती सूत्र, अध्याय 15)

प्रसिद्ध राजा –

1. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (सम्राट विक्रमादित्य) – उज्जैन के सबसे प्रसिद्ध सम्राट माने जाते हैं। उनके नाम पर ही विक्रम संवत की गणना प्रारंभ हुई (57 ईसा पूर्व)। वे न्यायप्रिय, विद्वान संरक्षक और शक्तिशाली शासक थे।

2. सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय (गुप्त वंश)- विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त की। उज्जैन को उन्होंने अपनी उपराजधानी बनाया था।

3. सम्राट अशोक (मौर्य वंश)- युवराज काल में उज्जैन के राज्यपाल रहे थे। यहाँ से उन्होंने शासन-कला सीखी और बाद में महान सम्राट बने।

4. राजा भोज (परमार वंश)- यद्यपि उनका मुख्य शासन स्थल धार था, पर उज्जैन भी उनके अधीन था। उन्होंने शिक्षा, वास्तुकला और साहित्य को प्रोत्साहित किया।

प्रसिद्ध जैन राजा – उज्जैन के प्रमुख जैन राजा (इतिहास व परंपरा में उल्लिखित) – उज्जैन के साथ जैन परंपरा का गहरा संबंध रहा है, और यहाँ इतिहास में अनेक जैन धर्मानुयायी राजाओं का शासन रहा। ऐतिहासिक एवं साहित्यिक स्त्रोतों से प्रमुख जैन राजाओं की सूची इस प्रकार मानी जाती है —

- 1. सम्राट विक्रमादित्य (वास्तविक या परंपरागत) – अनेक जैन परंपराओं में विक्रमादित्य को जैन धर्म का संरक्षक राजा माना गया है।
- 2. राजा चन्द्रसेन – उज्जैन के इस राजा का उल्लेख हरिवंश पुराण और जैन ग्रंथों में होता है। कहा जाता है कि वे जैन मुनियों का सम्मान करते थे और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन करते थे।

- 3. राजा भर्तृहरि - विक्रमादित्य के भाई और उज्जैन के राजा रहे भर्तृहरि वैराग्य और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध हैं। कुछ जैन परंपराओं में उन्हें जैन साधुओं से प्रेरित होकर वैरागी बनने की कथा मिलती है।
- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (गुप्तकालीन परंपरा में कुछ विवरण)** – जैन धर्मानुयायी माने गए, विशेषकर श्वेताम्बर परंपरा में उल्लेख मिलता है।
- **चन्द्रगुप्त मौर्य** - जैन परंपरा के अनुसार, वे जैन धर्मानुयायी थे और उज्जैन में शासन करने वाले प्रमुख शासकों में से एक माने जाते हैं। उनके जैन धर्मानुयायी होने का वर्णन **भद्दबाहुचरियं** (15वीं–16वीं सदी), वृहत्कथा कोश (931 CE) और दक्षिण भारतीय शिलालेखों में मिलता है।
- **श्रीपाल राजा** – प्राचीन कथाओं में उल्लिखित, उज्जैन से जुड़े जैन राजा, जिनका वर्णन 'श्ररपाल-रास' और प्रबंध ग्रंथों में है।
- **शंखराज** – जैन साहित्य में वर्णित, उज्जैन के धर्मपरायण राजा।
- **सिंहसेन** – जैन आख्यानों में उल्लेखित, दानशीलता व धर्मरक्षा के लिए प्रसिद्ध। प्रभाचन्द्रचरित के अनुसार, जैन धर्मानुयायी और उज्जैन के शासक।
- **विक्रमादित्य (जैन परंपरा का स्वरूप)** – कुछ जैन प्रबंधों में विक्रमादित्य को जैन धर्मावलंबी रूप में दर्शाया गया है।
- **शिवसिंह / शिवसेन** – प्राचीन जैन लेखों में उल्लेख, उज्जैन से शासन करने वाले।
- **पालित राजा** – जिनके समय में जैन आचार्यों ने मुनि परिषदें कीं।
- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (सम्राट चन्द्रगुप्त II विक्रमादित्य)** – जैन परंपरा में इन्हें जैन धर्म के संरक्षक के रूप में स्मरण किया गया है। उज्जैन को अपनी राजधानी बनाई।

- **श्रीपुंज (श्रीपुर)** – उज्जैन के प्राचीन जैन राजा, जिनका उल्लेख *परिशिष्ट पर्व* और *प्रभाचन्द्र चरित* में मिलता है।
- **महेंद्रसिंह** – कुवलयमाला ग्रंथ में वर्णित, जैन धर्मानुयायी उज्जैन के राजा।
- **गङ्गराज** – जैनाचार्यों के संरक्षक, उज्जैन में जैन मंदिरों के निर्माण हेतु प्रसिद्ध।
- **यशोवर्मा** – प्राचीन जैन शिलालेखों में उल्लिखित, उज्जैन के शासक एवं जैन धर्म के अनुयायी।
- **भोजराज परमार** – यद्यपि भोजराज अपने साहित्यिक योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु जैन परंपरा में भी उनका उल्लेख होता है क्योंकि उन्होंने जैन आचार्यों को संरक्षण दिया।
- **रिपुसेन** – कथाकोश और जैन पुराणों में वर्णित, जैन धर्म को मानने वाले उज्जैन के शासक।

जैन मंत्री व विद्वान (उज्जैन से जुड़े हुए)

- **सरस्वतीनाथ चक्रवर्ती के मंत्री-** उज्जैन को तीर्थंकर सरस्वतीनाथ से भी जोड़ा जाता है। उनकी शासन व्यवस्था में तपस्वियों और विद्वानों का विशेष सम्मान था।
- **मंत्री श्री अकलंकदेव (लगभग 8वीं सदी)** - उज्जैन के समीप क्षेत्र में जन्मे अकलंकदेव जैन दर्शन के महान आचार्य थे। वे किसी समय राज्य के मंत्री भी रहे और फिर मुनि दीक्षा ली। उन्होंने न्याय दर्शन पर अद्वितीय ग्रंथ लिखे जैसे – न्यायकुमुदचन्द्र।

जैन धर्मप्रेमी रानियाँ

- **रानी रूपमती (काल्पनिक/कथात्मक)** - जैन कथाओं में एक रानी का उल्लेख है जो उज्जैन की थी और जैन मुनियों से प्रभावित होकर संयम मार्ग पर चलीं। इन कथाओं का उद्देश्य स्त्रियों में धर्म के प्रति श्रद्धा को दर्शाना है।

- **रानी मृगावती (श्रीधर स्वामी की कथा में)** – उज्जैन के राजा की रानी मानी जाती हैं, जो जैन मुनि श्रीधर स्वामी के संपर्क में आकर धार्मिक मार्ग पर चलीं।

जैन धार्मिक धरोहर उज्जैन में –

- श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर
- केसरबाग जैन मंदिर
- फ्रीगंज जैन मंदिर
- जैन म्यूज़ियम – ज्ञानोदय तीर्थ
- सांदीपनि आश्रम के पास जैन धर्म से जुड़ी मूर्तियाँ व स्थल

उज्जैन का वैभव अद्वितीय है। उज्जैन ऐतिहासिक, पौराणिक और पारम्परिक नगर है। जिसे अवन्ती, उज्जयिनी, विक्रमपुरी, महाकाल की नगरी, सिंहस्थ नगरी (कुंभ नगरी), शिप्रा तट की नगरी, कालिदास की नगरी, कालभैरव नगरी, सप्तपुरी (पवित्र सात नगरों में एक), अमरावती, विशालापुरी, मोक्षदायिनी नगरी, कनकश्रृंगी, भुक्तिमुक्तिदायिनी, चक्रतीर्थ नगरी, भैरवनगरी, विक्रम की राजधानी, शिप्रावती, कुमारी नगरी, योगिनी नगरी, तंत्र नगरी, ज्योतिर्लिंग नगरी, उज्जयिनिपुरी, अवन्तिपुरी, धर्मपुरी, पुण्यपुरी, क्षिप्रानगरी, विक्रमादित्यपुरी, गढ़ कालभैरव, महाराज विक्रम की नगरी ये सब विविध नाम है। इन नामों के पीछे इतिहास है। इतिहास ऐतिहासिक लोगों से बनता है। अतः उज्जैन एक समृद्ध शाली राज्य के साथ-साथ समृद्धशाली राजपरम्परा का भी उदाहरण है।